0	+	6	=	6
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक

प्रश्न क्रमांक — 4

उत्तर → रस प्रमुख निम्न प्रकार है —
(1) संचारी भाव
(2) विभाव
(3) अनुभाव
(4) स्थाई भाव

प्रश्न क्रमांक — 5

मात्रिक और वार्णिक छन्द निम्न अन्तर है —

मात्रिक	वार्णिक
(1) मात्राओं के आधार पर रचा गया छन्द मात्रिक छन्द कहलाते है। इसमे — दोहा चौपाई	(1) वर्णो के आधार पर रचा गया छन्द वार्णिक छन्द कहलाता है। जैसे कवित्य, सवैया

प्रश्न क्रमांक — 6

गद्य पद्य से मिश्रित काव्य चम्पू काव्य कहलाता है जैसे — मैथिलि शरण का 'यशोधरा' काव्य

4

6	+	6	=	12
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 7

उत्तर ⇒ निमाड़ी —

प्रश्न क्रमांक - 8

(अ) उसका प्रत्येक काम गलत होता है।

(ब) कश्मीर का सौन्दर्य मनमोहक है।

प्रश्न क्रमांक - 9

(अ) पानी-पानी होना — ~~लज्जित~~ लज्जित होना

प्रयोग — रामू को चोरी करते पकड़ने पर उसके पिताजी पानी पानी हो गये।

(ब) खून पसीना एक करना — मेहनत करना

प्रयोग — रामू रात दिन पढ़ता है तभी तो वह परीक्षा मे प्रथम आया तो लोगो ने कहा रामू खून पसीना एक करके प्रथम आया है।

प्रश्न क्रमांक - 10

(अ) सायद राम घर पर हो।

(ब) जो व्यक्ति आलसी होते हैं वो ~~उन~~ उन्नति नही कर सकते हैं।

BSEMP

6

पृष्ठ के अंकों का योग

12	+	3	=	15
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 5 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्रमांक - 12

कवि ने 'उषा' और 'काम रात्रि' शब्द का प्रयोग महाकारी जल प्लवन के लिया किया है जो युगो के अन्त पर होता है उस समय घोर अंधकार हो जाता है काल वश कुछ नही दिखाई पड़ता एक भीषण प्रलय आती है और सारी ~~सृष्टि~~ विलिन ~~सृष्टि~~ विलीन हो जाती है और कि समय आने पर दूसरी सृष्टि प्रारम्भ हो जाती है सृष्टि प्रारम्भ की अवस्था को कविने 'काम रात्रि' कहा है। 'उषा' का प्रयोग कविने महाकारी जल प्लावन के लिये किया है।

3

प्रश्न क्रमांक - 13

निबन्धकार 'पदुम लाल पुन्ना लाल बख्शी' के समक्ष निबन्ध लिखने मे अनेक समस्या उत्पन्न होती है। निबंध लिखते समय उस विषय मे पूर्ण जानकारी होनी चाहिए यदि जानकारी न होतो पोथाचार से परामर्श करना चाहिए उस की भाषा सरल सुबोध एव सरल मर्मस्पर्शी होनी चाहिए।

3

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

(6) 15 + 6 = 21

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

निबंध का प्रभाव पढ़ने वाले के सीधे मस्तिष्क पर पड़ता है निबंध लिखते समय उचित भाषा का प्रयोग करना चाहिए और उसकी भाषा शैली सरल सुबोध होनी चाहिए।

(3)

प्रश्न क्रमांक - 6

गिरहकटों के गिरोह मे चीनी फेरी वाले को निम्न अनुभव उसे गिरहो का हर सदस्य उसे मारता गालियाँ सुनाता और ऐसा कई प्रकार के कष्ट दिये जाते है अच्छी तरह काम करने पर भात जमाकर पुरस्कार दिया जाता था और यदि अच्छी तरह से काम न करो तो बहुत सी सजा दी जाती जैसे दो पैरो पर खड़े होना गर्दन नीची कर कर खड़े रहना उसमे चीनी फेरीवाले ने जीवन की धन कमाने की सभी विधाय एक सी है किसी प्रयोग मनुष्य सही ढंग से करता है और किसी का बुरी तरह से लेकिन सभी धन कमाने की विधाये एक सी है।

(3)

6

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

प्रश्न क्रमांक - 17

राम प्रसाद बिस्मिल बड़े जीन्दा दिल इन्सान थे वह सोचते थे कि जब तक भारत के नर नारी को पूर्णरूप से सभी वस्तुओ पर समान अधिकार नही हो जाता है तब तक वे भारत मे ही जन्म लेना चहाते थे वे सोचते की कोई भी मनुष्य कीस किसी के दवाव मे न रहे सभी समान हो कोई छोटा बड़ा नही है इसलिये राम प्रसाद जी भारत मे ही बार-बार जन्म लेना चहाते थे उन्हे देव वाणी, अनुपम वाणी आदि मनुष्य मात्रो के मन मे घोल दी है रामप्रसाद बिस्मिल जब तक भारत स्वतंत्र नही होता है वे उसी मे जन्म लेना चहाते थे

प्रश्न क्रमांक - 18

तुलसी दास जी अपने मूर्ख मन को सीख दे रहे है कि मेरी सीख मान लो अभी वक्त है अभी से तू राम के चरणो की भक्ति कर

राम की भक्ति के बिना किसीने भी सुख नही पाया है किसी दिनो पूर्व चन्द्रमा और सूर्य भगवान के नेत्र थे आज वो आकाश मे भ्रमण कर रहे ही राहु केतु उन पर हमला कर रहे ही सुर सरिता एक पवित्र नदी ही वह कभी शंकर भगवान के सर पर थी लेकिन फिर भी आज वह सभी के चरणो मे निरंतर वह प्यार के रूप मे ~~बह रही ही~~ चल रही ही।

प्रश्न क्रमांक — 19

आत्मकथा और जीवनी मे निम्न अन्तर ही आत्मकथा मे एक व्यक्ति के एक ही घटना का वर्णन होता ही जबकि जीवनी मे ~~घटना~~ मे अनेक कथाऐं होती ही।

आत्मकथा साधारण पुरुष की जीवन का वर्णन होता ही जबकि जीवनी किसी महापुरुष का वर्णन होता ही

BSEMP

3
पृष्ठ के अंको का योग

आत्म कथा मे जीवन खुद के जीवन का वर्णन करता हैं। जीवनी मे व्यक्ति अन्य व्यक्तियो के जीवन वर्णन करता हैं। और उसमे अनेक कथाऐ होती हैं।

3

प्रश्न क्रमांक — 20

'भोर का तारा' रचना एक साधारण कवि के प्रेम की कहानी हैं वह एक ~~साधारण~~ साधारण व्यक्ति था लेकिन उसकी प्रेयसी राजमंत्री की वह थी कवि ~~के~~ शेखर के मित्र माधव के कहने जाना की कविता कर्तव्य प्रेम नही बल्कि देश के प्रति कर्तव्य से हैं और उसकी कविता श्रृंगार पूर्ण थी उसने अपने मित्र के कहने पर ~~अपने~~ उसने देश की रक्षा के लिये तत्पर हो जाता हैं और वीर रस की कविता करता हैं इससे ज्ञात होता हैं कि कवि का कर्तव्य देश प्रेम से हैं और वह अपनी प्यार भरी प्रेम की निशानी भोर का तारा जला देता हैं इससे नारी हृदय भूति होती हैं और माधव कहता हैं कि

२

(10) 30 + 9 = 39

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 10 के अंक | कुल अंक

ईश्वर अब तक भोर का तारा था अब प्रभात का सूर्य होगा।

(3)

प्रश्न क्रमांक - 21

मैं तुम लोगों से दूर हूँ कवि का आशय है कि एक निम्न वर्गीय व्यक्ति ऊँचे दर्जों के व्यक्तियों से कह रहा है कि मैं तुम लोगों से इतना दूर हूँ कवि कहता मैं दूसरी दुनियाँ में रहता हूँ और एक अकेला हूँ कविका यह आशय है।

(3)

प्रश्न क्रमांक - 22

काव्य की परिभाषा

रस युक्त वाक्य को काव्य की संज्ञा से विभूषित किया जाता है काव्य निम्न भेद दो होते है।

(1) दृश्य काव्य

(2) श्रव्य काव्य ये दोनों ही काव्य के भेद होते है।

B S E M P

9

पृष्ठ के अंकों का योग

(11) [39] + [4] = [43]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 11 के अंक | कुल अंक

B S E M P

प्रश्न क्रमांक - 23

तीन सयाने शब्द का आशय है धर्म, कला, विज्ञान, ये तीन है जो समाज का कल्याण करते है 'धर्म' जीवन जीने और सत्य की राह पर चलने का मार्ग बता ता है 'कला' व्यक्ति के कार्य मे सहभागिनी बन कर कार्य करती है विज्ञान जीने का सही और सुरक्षित मार्ग बताता है ~~वह~~ कवि कहता है ये तीनो है जो जीवन का कल्याण करते है लेकिन आज धर्म दूसरे के कहने पर चल रहा है और कला घटिया किस्म का कलंकन कर रहा है और विज्ञान हिंसा का मार्ग अपना रहा है कलाकार भूखो मरते है इसलिए रत्नकार ये तीन 'धर्म' 'कला' 'विज्ञान' समाज मे हीन योगदान दे रहे है।

(4)

प्रश्न क्रमांक - 24

महादेवी वर्मा का साहित्यिक जीवन इस प्रकार है।

(क) रचनाएँ :-

'नीरजा', 'निहार', 'यामा', 'दीप शिखा'

4

पृष्ठ के अंकों का योग

(12) 57 + 0 = 57

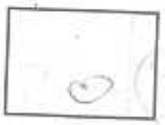

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 12 के अंक | कुल अंक

(3) भाषा शैली ⟹

महादेवी जी की संज्ञाहीन क्रिया एक करुण कथा है उन्हे हिन्दी भाषा नही आती वे अंग्रेजी की संज्ञाहीन क्रिया की थी वे अंग्रेजी, और अन्यो के शब्दो का प्रयोग करती थी उन्हो अपने काव्य मे अनेक प्रकार के ग्रन्थो का वर्णन किया है उनकी भाषा मे सरल - मधुरता है वे करुणा है उनकी भाषा मे ओज और माधुर्य गुण भी है महादेवी जी को बर्मी भाषा भी आती थी।

महादेवी जी ने अपने काव्य मे प्रायः सभी प्रकार की शैलियो का प्रयोग किया है। चित्रात्मक शैली मे उन्होने व्यक्ति का चित्र सा उपस्थित किया है मानो पढ़ने के साथ - साथ देख भी रहे हो उनके काव्य मे व्यंगात्मक शैली मे व्यंग उपस्थित है भावात्मक शैली मे उन्होने चीनी फेरी वाले के प्रति गहरी भावना प्रस्तुत की है और उन्होने विवरणात्मक शैली का भी प्रयोग प्रयोग किया है।

B S E M P

0

पृष्ठ के अंको का योग

(से) साहित्य में स्थान ⇒

छायावादी कवियित्री होने के कारण इनका साहित्य मे प्रथम स्थान है उन्होने अपने काव्य मे सभी प्रकार के साहित्य की रचना की है इसलिए ये हिन्दी साहित्य मे सदैव स्मरणीय रहेगी और इनका स्थान ~~साहित्य~~ मे बहुत महत्व पूर्ण स्थान है।

5

प्रश्न क्रमांक – 25

कबीर दास जी का साहित्यिक जीवन परिचय इस प्रकार है।

(अ) रचनाएँ ⇒

कबीर दास जी ने अपने काव्य मे तीन प्रकार की भाषा है जो इस प्रकार है – साखी, सबद, व रमैनी तीन भाषाये है साखी गेय पद है और सबद रमैनी भाषा है।

कबीर दास जी की उपलब्धी कृति बीजक है।

14 | 48 | + | 0 | = | 48

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 14 के अंक | कुल अंक

(8)

भावपक्ष => कबीर पढ़े लिखे नही थे उनका ज्ञान सत्संग और भ्रमण से आर्जित था उन्होने अपने काव्य मे कई प्रकार की भाषाओ का प्रयोग किया है उसमे उन्हे हिन्दी ब्रज, अवधी, सभी भाषाऐं शामिल कबीर को घुमक्कड़ कवि कहा जाता है।

अलंकार => उनके काव्य मे रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा सभी प्रकार के काव्य मे प्रयोग है।

रस योजना => उन्हो अपने काव्य मे भीरस की ~~[illegible]~~ प्रधान है।

शैली / कलापक्ष => कबीर दास जी ने अनेक प्रकार के रचना की है।

लोकहित की भावना => उन्होने सभी का खुल कर विरोध किया है कबीर दास जी ने हिन्दुओं की मूर्ती पूजा छाप तिलक और मुसलमानो की ऊँची आवाज का विरोध किया है

कंकर पाथर जोरी के मस्जिद लई बनायो ता चढ़ी मुल्ला बाग देये क्या बहरा हुआ खुदायो।

0

(15) 48 + 5 = 53
योग पूर्व पृष्ठ . पृष्ठ 15 के अंक कुल अंक

BSEMP

भ्रान्ति भावना ⟹
कबीर ने सभी प्रकार की भेद भावना का खुल का विरोध किया सभी का एक लक्ष्य है भगवान सर्वव्यापी है ये विभिन्न धर्म तो मनुष्य के बनाये हुये हैं। सब ईश्वर लोक ही सब का जनक और पालन कर्ता है
जाति पाँति पूछे नहि कोई
जो भजे सो हर को होई

प्रश्न क्रमांक – 26

सन्दर्भ ⟹ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक साहित्य भारती से अवतरित है इसके रचेयता 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी' द्वारा लेखा क्या लिखू? से लिया गया है।

प्रसंग ⟹ प्रस्तुत प्रसंग में कवि अपने लिये कहता है कि निबंध लिखते समय किन - किन बातों का ज्ञान होना चाहिए।

पृष्ठ के अंकों का योग

(16) | 57 | + | 5 | = | 56

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 16 के अंक | कुल अंक

व्याख्या —

कवि कहता है कि निबंध लिखते समय उसकी सभी प्रकार की स्थिति को ध्यान मे रखकर ही लिखना चाहिए उसके बारे मे पूर्ण जानकारी होनी चाहिए और उस विषय की जानकारी न होने पर किसी पुस्तकालय से जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और निबंध लिखते समय उसी पर ध्यान करना चाहिए और सब कुछ भूल जाना चाहिए और संसार की सभी वस्तुओ के रूप मे देखते हो और उन्ही के भावो के खोये होते है और उन्हे ही ग्रहण करते है।

विशेष — (1) इस कवि ने अपने निबंध की समस्याओं का वर्णन किया है।

(2) निबंध लिखते समय उसके बारे मे जानकारी होनी चाहिए।

5

... के अंकों का योग

(17) 58 + 4 = 62

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 17 के अंक — कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 29

प्रिय सहेली मीना,
सदा खुश रहो
विषय - सहेली को हायर सेकण्डरी परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर बधाई पत्र ।

कल सुबह तुम्हारा परीक्षा परिणाम प्रथम श्रेणी मे देखा तो मन खुशी नृत्य करने लगा सबसे पहले मै तुम्हे इस विषय मे बधाई देना चाहती हूँ मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि आप हर वर्ष इसी प्रकार प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होती रहो सभी बडो को नमस्ते और छोटो को प्यार
आपकी सहेली,
मनीषा दुबे

दिनांक - 10/3/07

4

... के अंकों का योग

(18) 64 + 6 = 68

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 18 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 28

(अ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक — "निन्दा"

(ब) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश —

उसमें प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की निन्दा करते हैं। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक गाथाओं के परायण पर आधारित होती है। वड़े रस विभोर होकर वे जीवन सत्य के लिये सुनाते हैं वे एक दूसरे की निन्दा करते हैं और वे अपनी बुराई नहीं देखते हैं। इस प्रकार इसका शीर्षक उचित है।

प्रश्न क्रमांक — 11

लोकगीत में व्यक्ति अपने मन के भावो को ~~व्यक्ति~~ व्यक्त करता है और उसे अपनी भावना से सुर से निकालता है इसमें सभी प्रकार की भावाओ में अपने लोकगीत होता है।

BSEMP

6

पृष्ठ के अंकों का योग

62	+	12	=	74
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 19 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्रमांक - 1

हिन्दी की दो प्रसिद्ध पत्रिकाओं के नाम —

(1) सहेली

(2) मधुरिमा

प्रश्न क्रमांक — 2

शुक्ल जी के शब्दों में →

निबंध उस रचना को कहते हैं जिसके भीतर एक सीमित आकार में निबंध की सौष्ठवता, स्वच्छता, निश्चित आकृति को ही निबंध कहते हैं।

यदि गद्य निबंध की कसौटी हैं तो निबंध गद्य की कसौटी है।

प्रश्न क्रमांक - 3

निमाड़ी —

खंडवा, झाबुआ, उज्जैन आदि जिलों में बोली बोली जाती है।

प्रश्न क्रमांक — 4

उक्त पंक्तियों में —

अनुप्रास अलंकार है।

BSEMP

20

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 20

रूपरेखा — प्रस्तावना, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण की रोकथाम, पर्यावरण संरक्षण उपसंहार।

प्रस्तावना ⇒ आज हमारे देश मे कई प्रकार के हानिकारक प्रदूषण हो रहा है इससे मनुष्य शांति से नही रह पा रहा है इतना हानिकारक प्रदूषण हमारे देश मे अनेक प्रकार के बिमारियो से मनुष्य पीडित है इससे हमारे देशवासियों की जान खतरे मे है। आज युग पर्यावरण का युग हो गया है।

पर्यावरण प्रदूषण ⇒ इसके अन्तर्गत अनेक प्रकार के प्रदूषण आते है जो भिन्न है इस प्रकार है।

जल प्रदूषण ⇒ इसमे जल का बहुत हानिकारक प्रयोग हुआ है जल मे अनेक हानिकारक जल जीवजु और पशु पक्षीयों को फेंकने से जल मे बहुत गंदगी हो जाती है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

इसी को पशु आदि पीने से मृत्यु के शिकार बन जाते है। इससे स्पष्ट है कि जल का संरक्षण बहुत आवश्यक है।

ध्वनि प्रदूषण ⟹ इसमें मे अनेक प्रकार के बहुत भयंकर आवाज वाले स्पीकर बजाये जाते है जिससे हमारे कान के पर्दे फटने के कारण हम लोग उसे अच्छी तरह से नही सुन पाते है। इसमें आये दिन रात बजने वाले रेडियो टेप आदि है। इससे हमारे परीक्षा मे विघ्न उत्पन्न होजाता है।

वायु प्रदूषण ⟹ इसमें वायु मानिकी बहुत हानिकार गैसे जो हमारे जीवन के लिये बहुत हानिकारक है इन गैसो को दिन रात पौधे ग्रहण करते रहते है और इसके बदले मे शुद्ध O₂ भेजते रहते है इसलिये हम वायु आज अच्छी तरह से स्वास ले रहे है। नही तो हमे आज मृत्यु का शीकार होना पड़ता आज से हम अपने आस पास प्रदूषण को रोकेंगे।

सावधान मनुष्य सावधान यदि तलवार है ताकत तो इसे दे फेंक।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

स्वच्छ पर्यावरण =>
आज लोगों बहुत ही पेड़ों की कटाई कर रहे है जिससे पर्यावरण अस्वच्छ होता है पेड़ों के काटने से हमारे जीवन के शुद्ध वायु नही मिल पाती है। जिससे मनुष्य को बहुत सी हानिकारक बिमारियों का शिकार होना पड़ता है। और यदि वह अच्छे - 2 काम करे पेड़ों को अपने आस पास लगाये और उन्हे पानी दे जिससे हमारा जीवन सुखमय रहे।

दूषित पर्यावरण =>
कई प्रकार के हानिकारक दवाओं के कारण हमारे जीवन मे अनेक बिमारियां जैसे T.B. कैंसर जैसी खतरनाक बिमारियाँ उत्पन्न हो रही है। जिससे मनुष्य खुशी से जीवन यापन नही कर सकता है। और वह बहुत से हानिकारक जीवन मे पड़कर अपना रहा है जिससे मनुष्य को देखरेख नही ले नही हो पा रही है क हे पेड़ों के कट जाने से हमे कई चीजो हर तरह नही दिखाई देते है।

BSEMP
पृष्ठ के अंकों का योग

23

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

पर्यावरण संरक्षण ⇒ हमारे जीवन मे पर्यावरण यदि शुद्ध है तो मानव उसका प्रयोग भी सही तरह से कर सकता है मनुष्य को अपने जीवन मे सभी प्रकार की चीजो का उपयोग करना चाहिए इससे हमारे आस पास हरा भरा रहता है इससे व्यक्ति खुशियो से चहचहाते रहते है। और उनका यह सुन्दर सपना साकार हो जाता है इससे सबका कर्तव्य है पर्यावरण को रोका जा सकता है इससे मनुष्य का जीवन सुन्दर और सुखमय होगा।

उपसंहार ⇒ पर्यावरण आज इतना दूषित है कि इसका समाधान करना बहुत कठिन है लोग आज सिर्फ अपना काम करते है अपने काम से मतलब आज दुनिया उजड़ी पड़ती है कही दूर, कोसो, मीलो तक पानी भी नही मिलता है व्यक्तियो से इसका समाधान आज का युग वर्तमान का युग है इसके दुनिया अपने घर से बाहर निकल कर भी नही देख रही की दुनिया मे कितना प्रदूषण पर्यावरण हो रहा है। इसका समाधान अत्यंत आवश्यक है।

(24) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 24 के अंक | कुल अंक

सन्दर्भ — प्रस्तुत काव्यांश हमारी साहित्य भारती से लिया गया है इसके रचयिता विश्वेश्वर सरैया सक्सेना द्वारा लिखित सूरज को नहीं डूबने दूंगा।

प्रसंग :- इसमें कवि ने सूरज के बारे में कहा है कि सूरज के रथ पर सब सुख है।

व्याख्या :- कवि इन से कहता है कि तुम तो स्वाधीनता की मूर्ती हो तुम्हारे पास अनेक शक्तियाँ है और तुम धरती से जो सुख नहीं है वह सूरज के रथ पर है। और तुम्हारे शरीर में रक्त की तरह बहता है। और तुम तो चेतना का आविष्कार हो तुम्हारे पास तो सब सुख है न वह धरती में न आकाश में है। जो कि हमारे जीवन में नहीं है इसलिए कवि उसे सूरज के रथ से उतार लाना चाहता है।

विशेष :- (1) सूरज के रथ पर वह सुख है जो धरती पर नहीं है।
(2) उसके पास अजस्र स्रोत है ऊर्जा का स्रोत है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये

...ी सील

...क के हस्ताक्षर व दिनांक 13.3.

...ध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

...र क्रमांक

...क्षा का नाम

...य हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी

...ांक 13/03/07

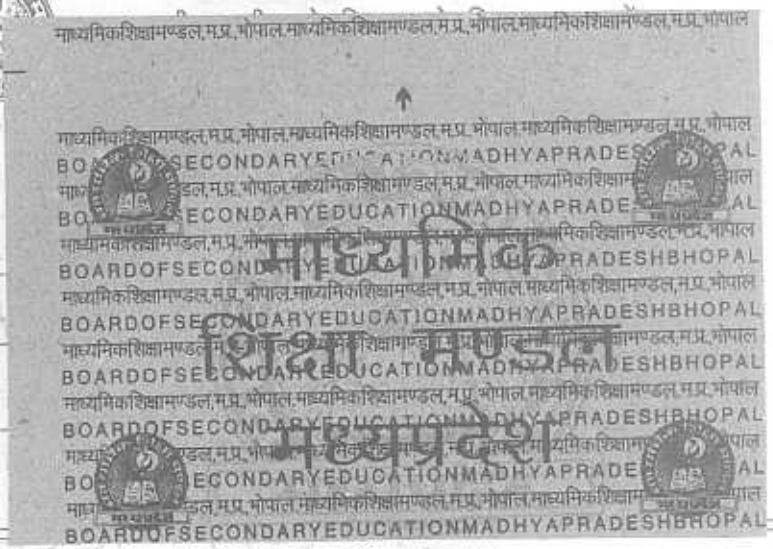

माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्नक्रमांक - 14

उत्तर→ द्विवेदी युग कि विशेषताऐं निम्न हैं।

(1) इसमे कवियो ने व्यांगात्मक शैली के साथ कटुशब्दो शब्दो का भी प्रयोग हुआ है।

(2) इसमे उन्होने सामदिपात्मक शैली का प्रयोग किया है।

(3) इस की भाषा सरल सुबोध है।

(4) द्विवेदी युग के कवि स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भी है।

(5) यथार्थ के सजीव का चित्रण है।

पृष्ठ

89	+	3	=	92
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 2 के अंक		कुल अंक

प्रश्न क्रमांक — 16

उत्तर — भगवान के घर देर ~~नहीं~~ है अन्धेर नही है। कवि कहता है कि शांति कार्य करने से और तसल्ली सबसे बडी चीज है जिस प्रकार 'यशोधरा' अपने पति के लौट ने की आशा लगाये बैठी थी और उसके स्वामी बिना बताये चले गये इसका तात्पर्य यह है कि यशोधरा को अपने पति के लौटने की आशा कम थी फिर भी वह उनकी लौटने की आस मे यशोधरा की साँसे चल रही थी और इससे तात्पर्य है कि भगवान के घर देर ~~नहीं~~ है अन्धेर नही हो सकता है। भगवान के घर देर से काम होता है लेकिन होता जरूर है इसलिये कवि ने कहा है कि सबको ~~सबको~~ भगवान पर आस्था रखनी चाहिए ~~और~~ और विश्वास होना चाहिए उस के तहत। कहा जा सकता है कि भगवान के सब के अच्छे बुरे फल को देखता है और वह भी देता है इस से कह सकते है कि भगवान के घर देर है अन्धेर नही होता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

ृष्ठ

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 4 के अंक	=	कुल अंक

92/100

B
S
E
M

अंकों का योग